भारतीय क्रान्ति दल
राष्ट्रीय मंच पर ऐसे समय
में आया है जबकि विघटनकारी
शक्तियाँ राष्ट्र की जड़ों को
खोखला करने में लगी हैं और
सत्ताधारियों भ्रम में इन शक्तियों पर अंकुश लगाने
की इच्छाशक्ति तक नहीं रह गयी है।

भारतीय क्रान्तिदल

अधिक पूंजी वाले बड़े पैमाने के ऐसे यान्त्रिक उद्योगों की स्थापना करेगा अथवा स्थापित करने की अनुमति देगा जिनका छोटे पैमाने पर चलाया जाना सम्भव नहीं है।

भारतीय क्रान्तिदल का सर्वोपरि उद्देश्य जनता को स्वच्छ एवं कुशल प्रशासन देने का है जिसमें अपेक्षित योग्यता वाले सरकारी कर्मचारी ईमानदारी और निष्पक्षता से कर्तव्य पालन करें

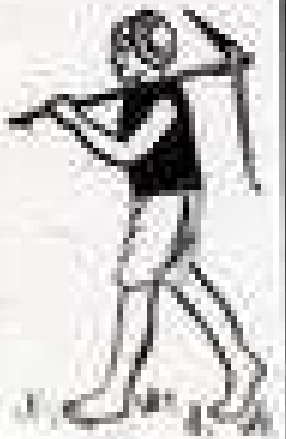

??

भारतीय क्रान्तिदल

प्रशासन में विलम्ब

लाल फीतेशाही, अपव्यय

और भ्रष्टाचार आदि को

बर्दाश्त नहीं करेगा।

पिछले २२ वर्षों में राष्ट्रीय धन का बेतहाशा अपव्यय और दुरुपयोग हुआ है जिससे मुद्रा स्फीति तथा हमारे राष्ट्रीय चरित्र और नैतिकता का पतन हुआ है।

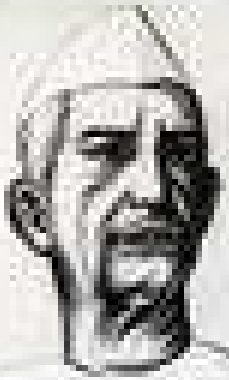

भारतीय क्रान्तिदल सुशासन
और सार्वजनिक धन के सदुपयोग
की दृष्टि से इन सब कर्मचारियों के विरुद्ध
जो भ्रष्टाचार, अकुशलता तथा पक्षपात
के दोषी पाये जायेंगे-
कठोर कदम उठावेगा।

भारतीय क्रान्ति दल
सफेदपोश राजनैतिक
भ्रष्टाचारियों से निपटने के
लिए महत्वपूर्ण एवं
प्रभावशाली कदम उठावेगा।

भारतीय कम्युनिस्ट दल

जहां कृषि तथा औद्योगिक सहकारी समितियोंके पक्ष में है वहां वह ऐसी सहकारी खेती तथा सहकारी उद्योगों के पक्ष में नहीं है जिसमें श्रम तथा स्थायी सम्पत्ति अथवा भूमि और मशीनों का एकत्रीकरण होता है क्योंकि इस प्रकार की सहकारिता बिल्कुल न चल सकेगी।

ऐसे अपराधियों और
और कुकर्मियों को जो बड़े पैमाने
पर धोखेबाजी, जालसाजी, गबन,
टैक्स की चोरी, जमाखोरी, कालाबाजारी,
तस्कर व्यापार अथवा स्टाक शेयर और विदेशी
मुद्रा के प्रहस्तन के अपराधी हों उन्हें
भारतीय क्रान्ति दल कड़े दण्ड देगा।

प्रभावशाली राजनैतिक व्यक्तियों,
भ्रष्ट उच्च अधिकारियों अथवा सिंड
हस्त गुण्डों की सहायता, गठबन्धन तथा
संरक्षण में चलनेवाले अवैध व्यापार को रोकने के
लिए भारतीय क्रान्ति दल
प्रभावशाली
कदम उठावेगा।

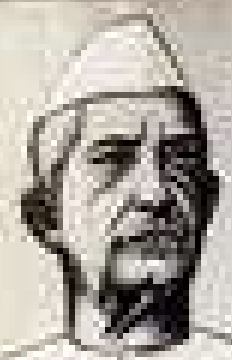

भारतीय क्रान्ति दल

का लक्ष्य एक ऐसा सर्वोपयोगी, प्रशासन देता है जिसमें संविधान तथा वैधानिक उपबन्धों के अनुसार देश में शान्ति और व्यवस्था दृढ़ता से बनाई जा सके। तथा जिसमें व्यक्तियों और दलों को अथवा सार्वजनिक जीवन में उनके स्थान को कोई महत्व न दिया जाय।

भारतीय क्रान्ति दल का जन्म
ऐसे समय में हुआ है जबकि देश
उद्देश्य विहीन होकर बहता जा रहा है,
और लगभग सभी राजनैतिक दल कानून
तोड़ने की सीख दे रहे हैं तथा देश के सम्पूर्ण सामाजिक
एवं राष्ट्रीय जीवन में अनुशासनहीनता व्याप्त
हो गयी है।

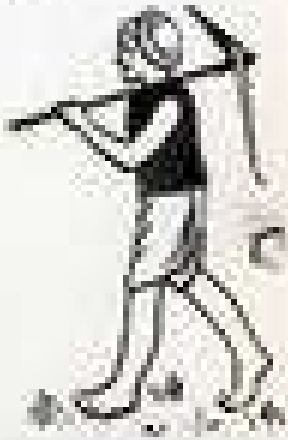

भारतीय क्रान्ति दल
के अनुसार तथा
कथित "सेनाओं" अथवा ऐसे
गैर सरकारी संगठनों का जो संकीर्ण हितों की
की पूर्ती के लिए गठित
किए जाते हैं, देश में कोई
स्थान नहीं होगा ।

भारतीय क्रान्ति दल

का ध्येय, देश की
न्याय व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन
करने का है जिससे अविलम्ब सही न्याय मिले
तथा झूठी गवाही, भ्रष्टाचार और अनावश्यक
व्यय का
निवारण हो सके।

भारतीय क्रान्तिदल

जहां यह चाहता है कि
सरकारी कर्मचारी
को अच्छा वेतन मिले और उसका विश्वास
किया जाये वहां यह भी चाहता है कि
अनुशासन का कठोरता से
पालन किया जाये।

भारतीय क्रान्ति दल

यह चाहता है कि सबसे निचली श्रेणी के कर्मचारियों के लिए महंगायी भता ऊंची दरों पर दिया जाय और जैसे-जैसे वेतन बढ़ता जाय उसी अनुपात में भते की दर कम होती जाय।

भारतीय क्रान्ति दल
आन्दोलन व प्रचार के
ऐसे तरीकों में विश्वास नहीं
करता जो पूर्णतः गांधीजी के सत्य
व अहिंसा के सिद्धान्तों
पर आधारित न हों।

भारतीय क्रान्ति दल

आमरण अनशन, धरना, अविनय

अवज्ञा, कानून भंग करना, घेराव

आदि साधनों को जो बहुधा असत्य, हिंसा

और द्वेष पर आधारित होते हैं आन्दोलन

व प्रचार का साधन नहीं बनायेगा।

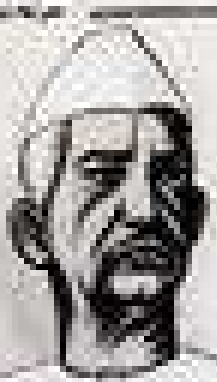

भारतीय क्रान्तिदल का उद्देश्य देश में जनतन्त्र अर्थात

विधि विधान की व्यवस्था के राज्य को बनाये रखना तथा उसे मजबूत करना है।

सार्वजनिक महत्व के प्रश्नों
पर सामयिक शासन सम्मत भेद
होने की सूरत में भारतीय क्रान्ति
दल आम जनमत को शिक्षित करेगा ताकि
आगामी आम चुनावों में इस दल को
बहुमत प्राप्त हो सके।

भारतीय क्रान्ति दल

क्षेत्र, भाषा अथवा समुदाय

के नाम पर उठनेवाली

विघटनकारी प्रवृत्तियों व तोड़ फोड़ का

सख्ती से दमन करने में विश्वास

करता है।

भारतीय क्रान्तिदल

देश की एकता बनाये

रखने तथा राष्ट्रीय जीवन

के विभिन्न अंगो को सुदृढ़ सूत्र में बांधने

में विश्वास करता है ।

भारतीय क्रान्ति दल का प्रादुर्भाव
ऐसे अवसर पर हुआ है जबकि
जनता का प्राय: प्रत्येक वर्ग व देश
का प्रत्येक भाग सम्पूर्ण देश के हितों की
बलि चढ़ाकर अपने विशिष्ठ स्वार्थों की पूर्ति में लगा है
तथा अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों के प्रति उदासीन
हो केवल अधिकारों की मांग कर रहा है।

भारतीय क्रान्ति दल

ऐसी अर्थव्यवस्था के लिए कार्य करेगा जिसमें कृषि के क्षेत्र में भूमि से प्रति एकड़ अधिक उत्पादन प्राप्त हो।

भारतीय क्रान्तिदल

ऐसी अर्थव्यवस्था के लिए

कार्य करेगा जिसमें उद्योग

के क्षेत्र में नियोजित पूंजी की

प्रत्येक इकाई पर अधिक

उत्पादन प्राप्त हो।

भारतीय क्रान्ति दल
चाहता है कि कृषि के
क्षेत्र में प्रति एकड़ भूमि पर
और उद्योग के क्षेत्र में नियोजित
पूंजी की प्रत्येक इकाई पर अधिक
लोगों को रोजगार प्राप्त हो। ताकि
बेरोजगारी समाप्त हो सके।

भारतीय क्रान्ति दल
चाहता है कि लोगों में
आय का अन्तर कम होता जाय
तथा देश में आर्थिक विषमतायें
दूर हों।

भारतीय क्रान्तिदल
ऐसे प्रयास करेगा कि एक
व्यक्ति दूसरे का शोषण न कर
सके क्यों कि आर्थिक शोषण से ही
राजनैतिक शोषण होने लगता है
जो जनतन्त्र के विपरीत है।

भारतीय क्रान्ति दल

इस बात का प्रयास करेगा कि छोटे
छोटे फार्म, जोत, हस्तकलाओं और
थोड़ी पूंजी से चलने वाले छोटे उद्योगों में लगे
लोगों का शोषण न हो तथा
इनका विकास हो।

३५

भारतीय क्रान्ति दल

ग्रामीण उद्योग धंधे, कुटीर

उद्योग धंधे तथा लघु स्तरीय उद्योग धंधों

के विकास के लिए पर्याप्त सुविधायें

प्रदान करेगा।

शहरी क्षेत्रों में ऐसे बहुत से लोग हैं जो उन जमीनों के मालिक नहीं हैं जिन पर उनके मकान बने हुए हैं जिसके कारण जमींदार लोग उन्हें सब तरह से परेशान करते हैं भारतीय क्रान्तिदल उन्हें उन जमीनों का मालिक बनाने का विचार रखता है।

भारतीय क्रान्ति दल
प्रतिरक्षा एवं अनुसंधान
सम्बन्धी आवश्यकताओं
की पूर्ति करने वाले सभी उद्योग और
परियोजनाओं की स्थापना सरकार की ओर
से करायेगा अथवा सरकार के
पूर्ण नियन्त्रण में रखेगा।

भारतीय कान्ति दल

विभिन्न उद्योगों

के क्षेत्र का सीमा निर्धारण

एक विशिष्ट कानून

द्वारा करायेगा।

भारतीय क्रान्तिदल का प्रादुर्भाव ऐसी परिस्थितियों में हुआ है जबकि हमारा नैतिक स्तर और राष्ट्रीय चरित्र गिरता जा रहा है तथा बेरोज़गारी आर्थिक विषमतायें, भ्रष्टाचार और सर्वत्र निराशा का दायरा बढ़ता जा रहा है।

भारतीय क्रान्तिदल देश की
वर्तमान परिस्थितियों में
स्वचालित यन्त्रों तथा बिजली
से चलने वाले संगणकों (कम्प्युटरों) के प्रयोग का
विरोधी है, सिवाय ऐसी विशेष दशाओं
के जहां शीघ्रता तथा शुद्धता
अत्यावश्यक है।

भारतीय क्रान्ति दल
चाहता है कि तकनीकी
और ज्ञान में वृद्धि के साथ
साथ पहले लघु उद्योग, इसके बाद
हल्के और मध्यम स्तर के उद्योग
और सबके अन्त में भारी
उद्योग आने चाहिए !

वृहद राष्ट्रीय हितों के उद्योग
स्पात तथा विद्युत शक्ति के
उत्पादन को छोड़ कर भारी और बड़े
पैमाने के उद्योग उचित समय पर हमारी
अर्थ व्यवस्था के छोर पर
आने चाहिए।

भारतीय क्रान्ति दल
कृषि को सर्व प्रथम स्थान
देगा क्यों कि विदेशी
अनाज के आयात से हमारे देश का
अतुल धन बाहर जा रहा है तथा
हमारे आत्म सम्मान को भी
ठेस लग रही है।

भारतीय क्रान्ति दल
का यह निश्चित विश्वास
है कि कृषि का विकास किए
बिना देश का आर्थिक विकास नहीं
हो सकता और न गरीबी ही
मिट सकती है।

भारतीय क्रान्ति दल
यह मानता है कि केवल
समृद्ध तथा विकासशील कृषि
ही पक्का माल पैदा करने वाले
उद्योगों को कच्चा माल
दे कर चालू रख सकती है।

भारतीय क्रान्ति दल का विश्वास है कि कृषि के विकास से भिन्न भिन्न वस्तुओं व सेवाओं की मांग बढ़ेगी क्यों कि जितना कृषि उत्पादन बढ़ेगा - उतनी ही किसानों की क्रय शक्ति बढ़ेगी।

भारतीय क्रान्ति दल
अधिक से अधिक उन्नत
बीज, उर्वरक, सिंचाई के
साधन एवं वैज्ञानिक ज्ञान किसानों को देने
का प्रयास करेगा और कृषि विकास के
लिए अपनी सारी शक्ति लगायेगा।

भारतीयक्रान्तिदल
बड़े पैमानेकी सिंचाई
योजनाओंके स्थान पर छोटे पैमानेकी
सिंचाई योजनाओंको प्राथमिकता देगा।

भारतीय क्रान्ति दल इस बात का प्रयास करेगा कि थोड़ी आय वाले कृषि व्यवसाय में लगे लोगों को अधिक आय वाले कृषि से भिन्न व्यवसायों में लगाया जाय। और यह क्रम तब तक चालू रक्खा जाय जब तक कि किसान की आय उसी स्तर पर न पहुंच जाय जो देश के अन्य पेशों में काम करने वाले लोगों की है।

वर्तमान दयनीय राष्ट्रीय स्थिति
के लिए राजनैतिक नेतृत्व
दोषी है जिससे लोगों को
धोखा मिला है और जिसने
केवल वोट लेने केलिए लोगों को गुमराह किया
ऐसे ऐतिहासिक घटनाक्रम में
भारतीय क्रान्तिदल के ऊपर भारी
उत्तरदायित्व है।

भारतीय क्रान्ति दल
कृषि उत्पादन
बढ़ाने की दृष्टि से
खेती करने के तरीकों
व हुनर को अधिक उन्नत एवं
वैज्ञानिक बनाने का प्रयास
करेगा।

भारतीय क्रान्तिदल

चाहता है कि खेती के

काम में से अधिक से अधिक

व्यक्तियों को हटाकर उन्हें कृषि

कार्यों के अलावा दूसरे कार्यों

में लगायाजाय ।

पृ.१

भारतीय क्रान्तिदल
व्यापार, वाणिज्य, उद्योग और वित्त
जगत में शरीफ अपराधियोंसे निपटनेके लिए पुलिस
विभागके आधीन प्रशिक्षित कर्मचारियोंकी
एक शाखा अथवा विभाग खोलने
का विचार
रखता है।

भारतीय क्रान्तिदल
का इरादा है कि प्रत्येक गांव में
बिजली पहुंचाई जाय जिससे कृषि
की पैदावार बढ़ाई जा सके. कृषि से इतर धंधों
का विकास हो सके तथा वर्तमान युग की
सुविधायें गांव वालों को भी मिल सके।

भारतीय क्रान्ति दल

चाहता है कि देश में जहां कहीं

अब भी जमींदारी प्रथा शेष है वहां भी

इसका समूल विनाश कर दिया जाय और किसान

को अपनी भूमि में स्वामित्व के स्थायी

अधिकार दे दिये जायं।

भारतीय क्रान्ति दल
चाहता है कि देश में कोई
किसान अधिक से अधिक कितनी जमीन
खरीद सकता है उसकी सीमा निश्चित कर दी
जाय तथा अधिकतम जोत सीमा का भी पुर्न निर्धारण
वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार कर दिया जाये।

गांव समाज की सम्पति
का सदुपयोग हो इसके
लिए भारतीय क्रान्ति दल आवश्यक
कदम उठावेगा।

भारतीय क्रान्ति दल चकबन्दी और भूमि संरक्षण की योजनाओं को दृढ़ता व ईमानदारी से सफल बनावेगा ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति के ह्रास को रोका जा सके।

५८

आवश्यकता पड़ने पर
भारतीय क्रान्ति दल

खाद्यान्न का क्रय सीधे सरकार द्वारा अथवा
अन्न निगम के द्वारा करायेगा न कि आढ़तियों
के जरिये।

पृ.ट

भारतीय क्रान्तिदल
अन्न की गैरकानूनी
जमाखोरी तथा काले बाजार की
मुनाफाखोरी के विरुद्ध कड़े
कदम उठायेगा।

भारतीय क्रान्ति दल

लोगों को नग्न सचाई बतायेगा

तथा उनकी समस्याओं का

समाधान बताकर उन्हें राष्ट्र निर्माण में लगने

की प्रेरणा देगा।

भारतीयक्रान्तिदल
का यह मत है कि
वर्तमान खाद्य क्षेत्रों को तोड़कर
देश को आर्थिक या बाजार की दृष्टि
से फिर एक इकाई बना
दिया जाय।

भारतीय क्रान्ति दल

छोटे-छोटे उद्योग तथा जोतों में सहकारिता के सिद्धान्त

तथा इसकी उपयोगिता में विश्वास रखते हुए भी सहकारिता को सरकारी विभाग का उपयुक्त विषय नहीं मानता।

भारतीय क्रान्तिदल

यह मानता है कि सहकारी संस्थायें जन साधारण की आवश्यकता के फलस्वरूप उनके अन्तःकरण की प्रेरणा से उत्पन्न हों न कि सरकारी या राजनैतिक आदेश के फलस्वरूप।

आज की सबसे बड़ी
आवश्यकता इस बात
की है कि देश को वास्तविकता
व यथार्थवाद के रास्ते
पर लाया जाय।

छोटे उद्योगों वाली जिस
अर्थव्यवस्था की
कल्पना भारतीय क्रांतिदल
करता है उसके अन्तरगत मालिक
मजदूर विवाद की कोई
गुंजाइश न रहेगी।

भारतीय क्रान्तिदल की नीति है

कि श्रमिकों के साथ कोई बुरा व्यवहार न किया जाय और न उनका शोषण होने पावे।

६५

भारतीय क्रान्ति दल
मालिक के उस लाभांश
पर जिसको कि वह औद्योगिक अर्थ व्यवस्था
में पुनः नियोजित नहीं करता भारीकर
लगाने में विश्वास रखता है।

भारतीय क्रांति दल इस प्रकार
की श्रम नीति बनायेगा
जिससे कि औद्योगिक लागत
अधिक न बढ़े और औद्योगिक वस्तुओं
की कीमत हमारे जन समुदाय की आय
अथवा क्रय शक्ति की सीमा
के अन्दर रहे।

भारतीय क्रान्ति दल
इस प्रकार की औद्योगिक
तथा श्रमनीति बनायेगा तथा
श्रमिकों और उद्योगपतियों के
श्रम के प्रति उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन
करेगा कि देश के श्रमिकों का प्रति
व्यक्ति उत्पादन बढ़ सके।

भारतीय क्रान्ति दल

लोगों की योग्यता

कार्यक्षमता और गुणवत्ता बढ़ाने के

लिए श्रेष्ठ प्रशिक्षण की व्यवस्था करेगा

तथा उपयुक्त सामाजिक वातावरण

का निर्माण करेगा।

जनताको बहुत सी मृग
मरीचिकायें भूलनी होंगी जिनका
सृजन विभिन्न राजनैतिक दलों ने
22 वर्षों में किया है।

भारतीय क्रान्ति दल

लोगोंकी भाग्यवादी "विश्व एक मायाजाल है" "विधाता भाग्य निर्माता है" आदि आदि मान्यताओं, दृष्टिकोणों तथा प्रवृत्तियोंमें परिवर्तन लानेका प्रयास करेगा जो आर्थिक विकास के मार्ग में बाधक हों।

भारतीय क्रान्ति दल यह मानता है कि साम्यवादी धारणाओं के कारण हमारे समाज के बहुत बड़े वर्ग में अपने पुरुषार्थ से उन्नति करने की इच्छा पैदा नहीं हो पाती।

भारतीय क्रान्ति दल

लोगों को यह समझायेगा कि

विश्व एक वास्तविक सत्ता है तथा

मनुष्य अधिकांशतः अपने भाग्य का स्वयं निर्माता

है। भारत यदि मूढ़ विश्वास तथा रूढ़ियों

में ही जकड़ा रहा तो यह निर्धन

ही रहेगा।

भारतीय क्रांति दल

यह विश्वास करता है कि
मनुष्य उचित कर्तव्य
परायणता से ही किसी अधिकार को पाने का
पात्र बन सकता है। इस धरती पर कोई भी
व्यक्ति बदले में बिना कुछ दिए
सम्भवतः कुछ प्राप्त नहीं कर सकता।

63,

भारतीय क्रान्तिदल
प्रयत्न करेगा कि हमारे
देश की जनता में अपने
मस्तिष्क तथा शारीरिक संसाधनों पर निर्भर
रहने की भावना उत्पन्न हो और वह
विदेशी सहायता का मुंह न ताके।

भारतीय क्रान्ति दल
का यह निश्चितमत है
कि हम विश्व के सम्मान
के तभी अधिकारी बन सकेंगे जब
कि अपने पैरों पर खड़े होने और अपनी निजी
प्रतिभा तथा आर्थिक साधनों के आधार पर
अपनी समस्याओं को हल करने का दृढ़
संकल्प कर लें।

भारतीय क्रान्तिदल
जाति पांत के शिकन्जे
को, जिसने आज
हमारे समाजको जकड़
रखा है, ढीला करनेकी
सतत कोशिश करेगा।

भारतीय क्रान्तिदल
का विश्वास है कि जन्मगत
जाति पांत की प्रथा परिश्रम
की महत्ता की मान्यता के विपरीत पड़ती है
और इससे ऐसा वातावरण उत्पन्न हो जाता है
कि जहां शारीरिक परिश्रम करना
हीन समझा जाता है।

भारतीयक्रान्तिदल
की धारणा है कि
जाति पांतकी प्रथा लोकतन्त्र
कप्रतिकूल हैतथाइसे प्रभावशाली
ढंगसेसमाप्तकरना चाहिए।

भारतीयक्रान्तिदल हरिजनोंतथाअनुसूचित जातियोंके उत्थानकी ओर

विशेष ध्यान देगा जिनके साथ हमारे समाज ने दीर्घकाल से अन्याय किया है।

भारतीय क्रान्ति दल का विश्वास
है कि देश का उद्धार अब भी
किया जा सकता है
परन्तु वह अधिकतर महात्मा गांधी द्वारा
बताये हुए मार्ग का अनुसरण
करके ही हो सकेगा।

भारतीय क्रान्ति दल
हरिजनों के हितों की
सुरक्षा और बढ़ावे
के लिए जो विधि और संविधान की
धारायें हैं उन्हें कड़ाई के साथ
अमल करेगा।

भारतीय क्रान्तिदल

चिकित्सा सम्बन्धी सुविधायें चाहे वे आयुर्वेदिक, यूनानी, एलो-पैथिक, होम्योपैथिक अथवा प्राकृतिक हों, अधिक से अधिक मात्रा में उपलब्ध कराने तथा इन सुविधाओं की कुशलता बढ़ाने की कोशिश करेगा।

भारतीय क्रान्ति दल

गावों की सफाई

तथा महिलाओं के लिए

निजी या सार्वजनिक शौचालय

बनाने की कोशिश करेगा।

भारतीय क्रान्ति दल
विशेषकर शहरों में
मिलावट के अपराध का
कठोरता के साथ दमन करेगा ताकि
लोगों को दवा और भोज्य पदार्थ
शुद्ध अवस्था में प्राप्त
हो सके।

भारतीय क्रांति दल
अर्थाभाव के कारण आरम्भ में
केवल व्यापक अनिवार्य
प्राथमिक शिक्षा, तकनीकी
शिक्षा तथा वैज्ञानिक अनुसंधान की
व्यवस्था पर अपना ध्यान केन्द्रित करेगा।
उच्चतर और माध्यमिक शिक्षा को
कुछ समय तक गैर सरकारी क्षेत्र के प्रयत्नों
पर ही छोड़ना होगा किन्तु पर्याप्त आर्थिक
सहायता दी जायगी।

भारतीय क्रान्ति दल

शिक्षा के स्तर तथा अध्यापकों की सेवा सम्बन्धी स्थिति में सुधार के उद्देश्य से नियमों में परिवर्तन करेगा ।

८५

भारतीय क्रान्ति दल
तकनीकी, वैज्ञानिक
व अन्य सभी प्रकार की
शिक्षा के लिए हिन्दी भाषा की
पुस्तकें तैयार करानें की
ओर ध्यान देगा ।

पाठ्य पुस्तकों में देश भक्ति,
कठोर परिश्रम, साहस, ईमानदारी
कर्तव्य परायणता एवं अन्य नैतिक
मूल्यों पर अपेक्षा कृत अधिक जोर दिया जायगा
क्योंकि इन गुणों के बिना न तो कोई मनुष्य अच्छा
नागरिक हो बन सकता है और न अच्छे
नागरिकों के बिना कोई देश
उन्नति ही कर सकता है।

उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने
की बात छोड़कर .क्योंकि
उस दिशा में उर्दू की शिक्षा
प्रत्येक विद्यार्थी के लिए
अनिवार्य करनी होगी,भारतीय क्रांति दल
उर्दू की पढ़ाई को पूरा
प्रोत्साहन देगा।

भारतीय क्रान्ति दल का विश्वास है कि शिक्षा संस्थायें सरस्वतीदेवीकेमंदिर हैं और उनका उपयोगकेवल स्वतंत्र अध्यापन, अनुसंधान, विवेचन, वाद-विवादके केन्द्रोंके रूप में ही होना चाहिए न कि राजनैतिक सत्ता के लिए अखाड़े के रूप में।